सामाजिक समरसता

कवि परिचय

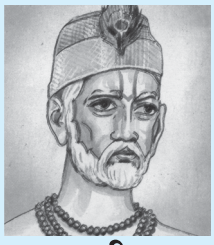

कबीर

कबीर भक्तिकाल की निर्गुण धारा की ज्ञानाश्रयी शाखा के अन्तर्गत सन्त-काव्य धारा के प्रमुख और प्रतिनिधि कवि हैं। नामदेव द्वारा प्रवर्तित सन्त-काव्य-परम्परा को सुप्रतिष्ठित एवं सुविकसित करने का श्रेय इनको ही दिया जाता है। उनके शिष्य धर्मदास के साक्ष्य पर कबीर का जन्म संवत् 1455 ई. माना जाता है। 120 वर्ष की दीर्घ आयु पूरी करके संवत् 1575 ई. में वे ब्रह्मलीन हुए। किंवदन्ती है, कि नीरू-नीमा नामक जुलाहा दम्पत्ति ने नवजात शिशु को कहीं पड़ा हुआ पाया। उसे अपना पुत्र मानकर उसका पालन-पोषण किया। वही बालक आगे चलकर कबीर हुए। कपड़ा बुनने का पैतृक व्यवसाय वे आजीवन करते रहे। साधु-सन्तों की संगति उन्हें बचपन से ही प्रिय थी। हिन्दू-मुसलमान का भेद-भाव उनके मन में नहीं था। कबीर रामानंद के शिष्य थे।

कबीर ने किसी ग्रंथ की रचना नहीं की। अपने को कवि घोषित करना उनका उद्देश्य भी नहीं था। उनकी मृत्यु के पश्चात उनके शिष्यों ने उनके उपदेशों का संकलन किया। यह संकलन 'बीजक' के नाम से प्रसिद्ध है। इस ग्रंथ के तीन भाग है-साखी, सबद ओर रमैनी। ये रचनाएँ कबीर ग्रंथावली में संगृहीत हैं।

कबीर ने बाह्याडम्बरों का विरोध किया है। उन्होंने निराकार ब्रह्म की उपासना पर जोर दिया है। उनका राम सर्वव्यापी है। कबीर जी एक कवि, भक्त और सुधारक के रूप में सामाजिक रूढ़ियों, अंधविश्वासों एवं शोषण की प्रवृति के प्रबल विरोधी थे। उन्होंने माया का विरोध किया है। कबीर की कविता के मुख्यत: तीन विषय है- प्रताड़ना, उपदेश ओर स्वानुभूति चित्रण। इन तीनों में उन्हें अभूतपूर्व सफलता मिली है। परमात्मा की भक्ति में जात-पाँत का भेद, ऊँच-नीच का भाव,

समाज और कविता का संबंध अन्योन्याश्रित है। समाज से ही कविता अपना प्राण-रस ग्रहण करती है। कविता अपने समाज का यथातथ्य चित्रण भी करती है और उसका दिशा-निर्देशन भी। इस तरह कविता में समाज के यथार्थ और समाज के आदर्श का चित्रण होता है। अपने समय और अपने आसपास को जानने-समझने के लिए कविता में सामाजिक यथार्थ की भूमिका का महत्व है। समाज को और समुन्नत बनाने के लिए कविता का सुधारात्मक आचरण काव्य की क्रांति-चेतना का भी पर्याय है। हिन्दी काव्य के इतिहास के सभी कालों में काव्य की सामाजिक भूमिका का विस्तार तत्कालीन समाज की प्रवृत्तियों का द्योतक रहा है। भक्तिकाल की सामाजिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, रीतिकाल के वैभव और ऐश्वर्यपूर्ण सामंती समाज का दिग्दर्शन और आधुनिक काल की राष्ट्रीय चेतना का विस्तार, सामाजिक सुधार के बहुआयामी संकल्प तथा सामाजिक विकास के स्वप्नों का परिदृश्य काव्य के युग-सापेक्ष सामाजिक स्वभाव को ही व्यक्त करता है।

अपने समय और समाज को व्यक्त करने के लिए कई कवियों ने अनेक पौराणिक प्रसंगों तथा अनेक लोक प्रसंगों को अपनी कविताओं की आधार-भूमि बनाया है। कुछ ऐसे भी कवि है जिन्होंने अपने समाज के अंतर्विरोधों को यथार्थ के स्तर पर अनुभव किया और सामाजिक परिवर्तन के लिए अपनी कविताओं में क्रांति का शंख फूँका। कबीर ऐसे ही कवि थे जिन्होंने अपने समाज में व्याप्त पाखंड, बाह्य प्रदर्शन, विद्वेष और उन्माद को गहराई से अनुभव किया था। उनके भीतर क्रांति की आग ऐसे ही समाज से टकराकर भड़की थी, वे अपने काव्य में इसीलिए सामाजिक सुधार की बात तीक्ष्ण व्यंग्यात्मक लहजे में व्यक्त करते हैं। उनकी दो टूक अभिव्यक्ति में उनके साहसी और निडर व्यक्तित्व को पाया जा सकता है, प्रस्तुत पदों में उन्होंने बाह्याडंबरों का विरोध किया है, वे धार्मिक पाखंडों के विरुद्ध हैं। वे स्पष्ट करते हैं कि उन्होंने समाज को अपनी आँखों से देखा है ओर वे अपनी कविता में इसी आँखिन देखे यथार्थ को व्यक्त कर रहे हैं। उन्होंने हिन्दू और मुस्लिम समाज में व्याप्त पाखंडों की चर्चा की है और स्पष्ट किया है कि समाज में समरसता के लिए दया-भाव का विस्तार आवश्यक है। इसी आधार पर हिन्दू-मुसलमान एक हो सकते हैं। वे उस गरीबी को महत्वपूर्ण मानते हैं जो प्रेम का विस्तार करना जानती है।

अयोध्या सिंह 'हरिऔध' ने पौराणिक प्रसंगों को अपनी कविता का आधार बनाया है। उन्होंने अपने समय के उपेक्षित और शोषित नारी समाज के उत्थान हेतु पौराणिक चरित्र राधा को आधार बनाया है। उनके प्रिय प्रवास की राधा विरहिणी होकर भी समाज सेवा में संलग्न है। वे अपने सेवा कर्म से संपूर्ण ब्रज का दुख बाँटती है। हरिऔधजी की तत्सम शब्दावली प्रभावोत्पादक है।

रूढ़ियों का अनुसरण, मूर्ति पूजा, तिलक-चन्दन, रोजा-नमाज आदि के लिये फटकारना उनके सन्त स्वभाव का द्योतक है। उनकी भर्त्सना में उपदेश का भाव है।

कबीर के उपदेश सम्बन्धी पदों में जीवन की दार्शनिकता भरी हुई है। उनमें गुरु-महिमा, ईश्वर-महिमा, प्रेम-महिमा, सत्संग-महिमा, माया का फेर आदि का सुन्दर वर्णन मिलता है। कबीर के काव्य में रहस्यवादी भावना मिलती है। वे आत्मा को दुल्हन और परमात्मा को प्रियतम मानते हैं। वे गुरु को सर्वश्रेष्ठ स्थान प्रदान करते हैं।

कबीर घुमक्कड़ सन्त थे। जगह-जगह साधु सन्तों के सम्पर्क में वे रहे थे। इसलिए कबीर की भाषा सधुक्कड़ी कहलाती है। वह एक बेमेल खिचड़ी भाषा थी जिसमें ब्रज, अवधी, खड़ी बोली, संस्कृत, अरबी, फारसी, राजस्थानी ओर पंजाबी भाषा के शब्द मिलते हैं। कबीर अपनी शैली के स्वयं निर्माता थे। सरलता, सुबोधता और स्पष्टता उनकी शैली की विशेषताएँ है। उनकी शैली में उलटबासियाँ और अन्योक्तियाँ भी मिलती हैं। कबीर को छन्दों का ज्ञान नही था, परन्तु छन्दों की स्वच्छन्दता ही कबीर की काव्य की सुन्दरता बन गई है। अलंकारों का चमत्कार दिखाने की प्रवृत्ति कबीर में नहीं थी, पर उनका स्वाभाविक प्रयोग हृदय को मुग्ध कर लेता है। इनके काव्य में उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, यमक अनुप्रास, विरोधाभास आदि अलंकारों के सुन्दर प्रयोग हुए हैं। कबीर की भाषा में अभिव्यक्ति के सभी आवश्यक सूत्र उपलब्ध हैं। इसीलिये आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने इन्हें, 'भाषा का डिक्टेटर' कहा है।

कबीर भक्त पहले और कवि बाद में थे। वे पढ़े लिखे नहीं बहुश्रुत थे। 'मैं कहता आँखिन की देखी, तू कहता कागद की लेखी' उनका मूलमंत्र था। उनकी कविता में सच्चे गुरु का भी गौरव गान मिलता है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि कबीर के काव्य का सर्वाधिक महत्व धार्मिक एवं सामाजिक एकता और भक्ति का सन्देश देने में हैं। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार, 'हिन्दी साहित्य के एक हजार वर्षों के इतिहास में कबीर जैसा व्यक्तित्व लेकर कोई उत्पन्न नहीं हुआ।'

कबीर की वाणी

मन लाग्यो मेरा यार फकीरी में।
जो सुख पावो नाम भजन में, सो सुख नाहि अमीरी में॥
भला-बुरा सबको सुनि लीजै, करि गुजरान गरीबी में॥
प्रेमनगर में रहनि हमारी, भलि बनि आई सबूरी में॥
हाथ में कूँड़ी बगल में सोंटा, चारों दिसा जगीरी में॥
आखिर यह तन खाक मिलैगा, कहाँ फिरत मगरूरी में॥
कहत कबीर सुनो भई साधो, साहिब मिलै सबूरी में॥1॥

मेरा तेरा मनवां, कैसे इक होई रे।
मैं कहता हौं आँखिन देखी, तू कहता कागद की लेखी।
मैं कहता सुरझावन हारी, तू राख्यो उरझाइ रे॥
मैं कहता तू जागत रहियो, तू रहता है सोइ रे।
मैं कहता निरमोही रहियो, तू जाता है मोहि रे॥
जुगन-जुगन समझावत हारा, कहा न मानत कोई रे।
तू तो रंगी फिरै बिहंगी, सब धन डारा खोइ रे॥
सतगुरु धारा निरमल बाहै, वामें काया धोइ रे।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, तब ही वैसा होई रे॥2॥

साधो, देखो जग बौराना।
साँची कहौ तो मारन धावै, झूठे जग पतियाना॥
हिन्दू कहत है राम हमारा, मुसलमान रहमाना।
आपस में दोऊ लड़ै मरतु हैं, मरम कोई नहिं जाना॥
बहुत मिले मोहि नेमी धर्मी प्रात करैं असनाना।
आतम छोड़ि पषानै पूजैं, तिनका थोथा ज्ञाना।
बहुतक देखे पीर औलिया, पढ़ै किताब-कुराना।
करै मुरीद कबर बतजावै, उनहूँ खुदा न जाना॥
हिन्दु की दया, मेहर तुरकन की, दोनों घर से भागी।
वे करैं जिबह वे झटका मारे, आग दोऊ घर लागी।।
या विधि हँसत चलत है हमको, आपु कहावै स्याना।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, इनमें कौन दीवाना॥3॥

कवि परिचय

अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

यदि आधुनिक काल के तुलसीदास के रूप में मैथिलीशरण गुप्त को स्वीकार किया जा सकता है तो सूरदास के रूप में कविवर अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' को माना जा सकता है। जिस प्रकार गुप्तजी ने रामभक्त होने के कारण भारतीय संस्कृति के विभिन्न क्षेत्रों में समन्वय प्रस्तुत किया ; उसी प्रकार 'हरिऔध जी' ने मुख्यत: कृष्ण के दिव्य चरित्र का गान मृदुल, मंजुल एवं मधुर शैली में किया । अयोध्या सिंह उपाध्याय का जन्म सन् 1865 ई० में उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ जिले के अन्तर्गत निजामाबाद में हुआ था। इनके पिता का नाम पं.भोलासिंह उपाध्याय और माता का नाम रूक्मिणी देवी था । स्वाध्याय से इन्होंने हिन्दी,संस्कृत,फारसी और अंग्रेजी भाषा का ज्ञान प्राप्त किया । इनके जीवन का ध्येय अध्यापन ही रहा। इनका जीवन सरल,विचार उदार और लक्ष्य महान था। 'प्रिय प्रवास ' पर इन्हें हिन्दी के सर्वोत्तम पुरस्कार 'मंगला प्रसाद पारितोषिक' से सम्मानित किया गया था । 6 सन् मार्च सन् 1947 ई. को इनका निधन हो गया।

हरिऔध जी ने गद्य एवं पद्य दोनों विधाओं में रचनाएँ की है। इनका विवरण निम्नानुसार है:-

काव्य रचनाएँ-प्रिय प्रवास और वैदेही वनवास (महाकाव्य),चौखे चौपदे,चुभते चौपदे,बोलचाल, रसकलस, पद्यप्रसून, कल्प लता पारिजात ,प्रेम प्रपंच,ऋतु मुकुर,काव्योपवन, प्रेम पुष्पोहार आदि।

गद्य रचनाएँ- उपन्यास- ठेठ हिन्दी का ठाठ,और अधखिला फूल

अलोचना- हिन्दी भाषा और साहित्य का विकास,कबीर पद्मावली की आलोचना अनूदित-बेनिस का बाँका,नीति निबंध आदि।

हरिऔध जी की प्रारंभिक रचनाएँ ब्रजभाषा में लिखी गई। द्विवेदी जी के आगमन पर काव्य की भाषा खड़ी बोली हो गई और उपाध्याय जी ने इस भाषा को अंगीकार कर प्रिय प्रवास महाकाव्य की रचना की। इसके बाद उनके

राधा की समाज सेवा

राधा जाती प्रति-दिवस थीं पास नन्दांगना के।
नाना बातें कथन करके थीं उन्हें बोध देती।
जो वे होती परम-व्यथिता मूर्छिता या विपन्ना।
तो वे आठों पहर उनकी सेवना में बितातीं॥ 1॥

घंटों ले के हरि-जननि को गोद में बैठती थी।
वे थी नाना जतन करती पा उन्हें शोक-मग्ना।
धीरे-धीरे चरण सहला औ मिटा चित्त-पीड़ा।
हाथों से थी दृग-युगल के वारि को पोंछ देती॥ 2॥

हो उद्विग्ना बिलख जब यों पूछती थीं यशोदा।
क्या आवेंगे न अब ब्रज में जीवनाधार मेरे।
तो वे धीरे मधुर-स्वर से हो विनीता बतातीं।
हाँ आवेंगे, व्यथित-ब्रज को श्याम कैसे तजेंगे॥ 3॥

आता ऐसा कथन करते वारि राधा-दृगों में।
बूंदों-बूंदों टपक पड़ता गाल पै जो कभी था।
जो आँखों से सदुख उसको देख पातीं यशोदा।
तो धीरे यों कथन करतीं खिन्न हो तू न बेटी॥ 4॥

हो के राधा विनत कहतीं मैं नहीं रो रही हूँ।
आता मेरे दृग युगल में नीर आनन्द का है।
जो होता है पुलक कर के आप की चारु सेवा।
हो जाता है प्रगटित वही वारि द्वारा दृगों में॥ 5॥

वे थीं प्राय: ब्रज-नृपति के पास उत्कण्ठ जातीं।
सेवाएँ थीं पुलक करतीं क्लान्तियाँ थीं मिटाती।
बातों ही में जग-विभव की तुच्छता थी दिखाती।
जो वे होते विकल पढ़ के शास्त्र नाना सुनातीं॥ 6॥

होती मारे मन यदि कहीं गोप की पंक्ति बैठी।
किम्वा होता विकल उनको गोप कोई दिखाता।
तो कार्यों में सविधि उनको यत्नत: वे लगाती।
औ ये बातें कथन करती भूरि गंभीरता से॥ 7॥

जी से जो आप सब करते प्यार प्राणेश को हैं।
तो पा भू में पुरुष-तन को, खिन्न हो के न बैठें।
उद्योगी हो परम रुचि से कीजिए कार्य ऐसे।
जो प्यारे हैं परम प्रिय के विश्व के प्रेमिकों के॥ 8॥

जो वे होता मलिन लखतीं गोप के बालकों को।
देती पुष्पों रचित उनको मुग्धकारी-खिलौने।
दे शिक्षाएँ विविध उनसे कृष्ण-लीला करातीं।
घंटों बैठी परम-रुचि से देखतीं तद्गता हो॥ 9॥

द्वारा महाकाव्य 'वैदेही वनवास' प्रकाशित हुआ। हरिऔधजी की कविता का भावपक्ष भक्तिकालीन कवियों के भावपक्ष से अलग है। भक्ति कालीन कवियों ने कृष्ण को एक परमब्रह्म माना लेकिन हरिऔध जी ने कृष्ण को एक महापुरुष मानकर उन घटनाओं के दैवीय स्वरूप को मानवीय स्वरूप ही दिया है। हरिऔध जी ने राधा को समाज सेविका के रूप में चित्रित किया है। 'पारिजात' पुस्तक में हरिऔध जी की अधिकांश दार्शनिक रचनाएँ है। इन रचनाओं से हरिऔध जी के दार्शनिक विचारों पर प्रकाश पड़ता है।

हरिऔध जी की भाषा के कई रूप हमें देखने को मिलते है। बोलचाल चोखे चौपदे चुभते चौपदे आदि काव्य ग्रंथों की भाषा उर्दू शैली से प्रभावित है। यह भाषा सरल एवं मुहावरेदार है। रस कलस की भाषा ब्रजभाषा है, जिस पर खड़ी बोली का प्रभाव दिखलाई पड़ता है। प्रिय प्रवास की भाषा संस्कृत प्रधान है। हरिऔध जी भाषा के धनी हैं। उनकी भाषा उनके भावों के पीछे-पीछे चलती है।

हरिऔध जी अपनी शैली के स्वयं जन्मदाता हैं। उनकी रचनाओं में प्रसाद,माधुर्य और ओज तीनों ही गुण मिलते है। उनकी शैली में प्रवाह और चमत्कार है। उनका समस्त साहित्य मुहावरों का एक विशाल कोश है। संस्कृत शैली में अतुकान्त कविता के वे सफल प्रयोगकर्ता है। उन्होंने अपनी शैली को प्रभावोत्पादक और आकर्षक बनाने के लिए अनुप्रास, उपमा और रूपक अलंकारों की सहायता ली है। हरिऔध जी मूलत: करुण और वात्सल्य रस के कवि है। करुण रस को ये अपना प्रधान रस मानते है। सवैया कवित्त,छप्पय, दोहा आदि इनके पुराने प्रिय छन्द है।

हरिऔध जी हिन्दी के महान कलाकार हैं। उपाध्याय जी के काव्य की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने अपने दोनों महाकाव्यों को अतुकान्त छन्दों में लिखा। अपने जीवनकाल में हरिऔध जी 'कवि सम्राट', 'साहित्य वाचस्पति' आदि उपाधियों से सम्मानित हुए तथा अनेक साहित्यिक सभाओं और हिन्दी साहित्य सम्मेलनों के सभापति भी रहे। इनकी साहित्यिक सेवाओं का ऐतिहासिक महत्व है। नि:सन्देह ये हिन्दी साहित्य की एक महान विभूति हैं।

पाई जातीं यदि दुखित जितनी अन्य गोपांगनाएँ।
राधा द्वारा सुखित वह भी थीं यथा रीति होती।
गा के लीला स्व प्रियतम की वेणु, वीणा बजा के।
प्यारी-बातें कथन कर के वे उन्हें बोध देतीं॥10॥

संलग्ना हो विविध कितने सान्त्वना कार्य में भी।
वे सेवा थीं सतत करती वृद्ध-रोगी जनों की।
दीनों, हीनों, निबल विधवा आदि को मानती थीं।
पूजी जाती ब्रज -अवनि में देवियों-सी अत: थी॥ 11॥

खो देती थीं कलह जनि, आधि के दुर्गुणों को।
धो देती थीं मलिन-मन की व्यापनी कालिमाएँ।
बो देती थीं हृदय-तल में बीज भावज्ञता का।
वे थीं चिन्ता-विजित-गृह में शांति धारा बहातीं।।12॥

आटा चींटी विहग गण थे वारि ओ अन्न पातें॥
देखी जाती सदय उनकी दृष्टि कीटादि में भी।
पत्तों को भी न तरूवर के वे वृथा तोड़ती थी।
जी से भी निरस्त रहती भूत-सम्बर्द्धना में॥13॥

वे छाया थीं सु-जन शिर की शासिका थी खलों में।
कंगालों की परम निधि थी औषधि पीड़ितों की ।
दीनों की थीं बहिन, जननी थी अनाथाश्रितों की।
आराध्य थी ब्रज-अवनि की प्रेमिका विश्व की थीं॥14॥

जैसा व्यापी विरह दुख था गोप गोपागंना का
वैसी ही थी सदै हृदया स्नेह की मूर्ति राधा
जैसी मोहावरित ब्रज में तामसी रात आयी।
वैसी ही वे लसित उसमें कौमुदी के समा थीं॥15॥

जो थी कौमार-व्रत-निरता बालिकाएँ अनेकों।
वे भी पा के समय ब्रज में शान्ति विस्तारती थीं।
राधा के हृदय -बल से दिव्य शिक्षा गुणों से।
वे भी छाया-सदृश उनकी वस्तुत: हो गई थीं॥ 16॥

तो भी आई न वह घटिका और न वे बार आए।
वैसी सच्ची सुखद ब्रज में वायु भी आ न डोली।
वैसे छाए न घन रस की सोत सी जो बहाते।
वैसे उन्माद-कर -स्वर से कोकिला भी न बोली॥17॥

जीते भूले न ब्रज-महि के नित्य उत्कण्ठ प्राणी।
जी से प्यारे जलद-तनको, केलि -क्रीड़ादिकों को।
पीछे छाया विरह-दुख की वंशजों -बीच व्यापी।
सच्ची यों है ब्रज-अवनि में आज भी अंकिता है॥ 18॥

सच्चे स्नेही अवनिजन के देश के श्याम जैसे।
राधा जैसे सद्य-हृदया विश्व प्रेमानुरक्ता॥
हे विश्वात्मा! भरत-भुव के अंक में और आवें।
ऐसी व्यापी विरह-घटना किन्तु कोई न होवे॥ 19॥

अभ्यास

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. कबीर ने पुस्तकीय ज्ञान की अपेक्षा किस ज्ञान को उपयोगी माना है?
2. राधा, दुखी माता यशोदा को क्या कहकर सांत्वना देतीं थीं?
3. राधा अपने विरह जनित दुख को छिपाने के लिए किस प्रकार का बहाना बनातीं थीं?
4. ब्रज वासियों के व्यथित होने का क्या कारण था?
5. कबीर का मन फकीरी में क्यों सुख पाता है?

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. कबीर ने संसार को पागल क्यों कहा है? भाव स्वष्ट कीजिए।
3. कबीर ने कर्मकाण्ड पर करारा प्रहार किया है। स्पष्ट कीजिए।
4. राधा ने विरह व्यथा में डूबे ब्रजवासियों को कर्तव्य पालन का उपदेश क्यों दिया था?
5. ब्रजवासियों के सुख-दु:ख दूर करने के लिए राधा ने क्या-क्या उपाय किए थे?
6. ब्रज -बालाओं का दु:ख राधा किस प्रकार दूर करतीं थीं?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. संकलित अंशों के आधार पर कबीर के विचार लिखिए।
2. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या लिखिए -

   अ. मन लाग्यो मेरा यार फकीरी में।
   जो सुख पायौ नाम भजन में, सो सुख नाहि अमीरी में ।।
   भला-बुरा सबको सुनि लीजै, करि गुजरान गरीबी में।।

   आ. तू तो रंगी फिरे विहंगी, सब धन द्वारा खोइ रे।
   सत गुरू-धारा निरमल बाहे, वा में काया धोई रे।
   कहत कबीर सुनो भाई साधो, तब ही वैसा होई रे॥
3. 'राधा की समाज सेवा' विषय का केन्द्रीय भाव लिखिए ।
4. ''अपने दुख को भुला देने का सबसे अच्छा उपाय है. अपने को किसी और काम में लगा देना''। राधा ने इस आदर्श का पालन किस प्रकार किया था?
5. ''पत्तों को भी न तरूवर के वृथा तोड़ती थी''। आधुनिक सन्दर्भ में इसकी उपयोगिता समझाइए।
6. निम्नलिखित काव्यांशों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए-

   अ. हो उदिग्ना विलख ..... तजेंगे।

   ब. सच्चे स्नेही..... कोई न होवे।

काव्य-सौन्दर्य-

1. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए-

   पथरा, चदरिया, कागद, जुग, जतन, हाथ

2. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए-

   पृथ्वी, आँख, पक्षी, पुष्प, दिन।

3. कबीर के संकलित पदों में कौन-सा रस है? स्पष्ट कीजिए।

4. कबीर की भाषा के संबंध में अपने विचार लिखिए।

5. निम्नलिखित काव्य पंक्तियों में अलंकार पहचानकर लिखिए -

   अ. काहे के ताना काहे के मरनी, कौन तार से बीनी चदरिया।

   आ. जुगन-जुगन समझावत हारा, कहा न मानत कोई रे।

   इ. राधा जैसी सदय-हृदया विश्व प्रेमानुरक्ता।

   ई. पूजी जाती ब्रज-अवनि में देवियों सी अतः थी।

6. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए -

   क. आखिर यह तन खाक मिलेगा, कहाँ फिरत मगरूरी में।

   ख. साधो देखो जग बौराना सांची कहौ तो मारन धावै झूठे जग पतियाना।

7. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए-

   गुण, प्रेम, सदय, विधवा, सबल

जानिए-

जब मात्रा, वर्ण संख्या, यति, गति या लय तथा तुक आदि के नियमों से युक्त रचना होती है, तब उसे छंद कहते हैं।

जब छंद के चरणों का गठन मात्राओं की संख्या पर निर्भर होता है तब उसे मात्रिक छंद कहते है।

वर्णिक छंद के चरणों का गठन वर्णों की संख्या के अनुसार होता है।

वर्णिक छंदो में वर्ण के साथ गण का बहुत महत्व है।

'गण' क्या है?

तीन अक्षरों के सम्मिलित समूह का नाम गण है।

गण के प्रकार-

गण के आठ प्रकार है, जिन्हें निम्नलिखित रचना सूत्र से जाना जा सकता है। इस सूत्र से छंद में प्रयुक्त गण को पहचाना जाता है। य माता राज भा न सलगा

क्रम	गण	लक्षण -	संकेत -	उदाहरण
1	यगण	यमाता	।ऽऽ	कमाना, जलाना

2.	मगण	मातारा	ऽऽऽ	काकाजी, माताजी
3.	तगण	ताराज	ऽऽ।	सोपान, तालाब
4.	रगण	राजभा	ऽ।ऽ	डालडा, कामना
5.	जगण	जभान	।ऽ।	समान, कमान
6.	भगण	भानस	ऽ॥	कोमल, सूरत
7.	नगण	नसल	॥।	कमल, सरल
8.	सगण	सलगा	॥ऽ	कमला, विमला

8. छन्द किसे कहते हैं? यह कितने प्रकार के होते हैं?

आइए सीखें-

हम यह जानते हैं कि 'रामचरित मानस' एक महाकाव्य है और 'पंचवटी' एक खण्डकाव्य है। यह प्रबन्ध काव्य के भेद हैं। प्रबन्ध काव्य में एक कथा का सूत्र विभिन्न छंदों के माध्यम से जुड़ा रहता है। प्रबन्ध काव्य में क्रमशः रूप से कोई कथा निबद्ध रहती है।

रामचरित मानस, पंचवटी, यशोधरा, कामायनी, सुदामा चरित प्रबन्ध काव्य हैं।

और भी जानिए-

बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाय।
सौंह करै भौहन हँसे, देन कहें नटि जाय।
कोऊ कोटिक संग्रह, कोऊ लाख हजार।
मो सम्पति यदुपति सदा, विपति विदारनहार॥

क्या ये दोनों दोहे एक दूसरे से किसी कथा सूत्र में बंधे हैं?

यदि इन दोहों को आगे -पीछे लिख दिया जाए या पढ़ा जाए, तो अर्थग्रहण में कोई व्यवधान आता है?

ध्यान दीजिए

ये दोनों दोहे अपने आप में पूर्ण और स्वतंत्र है ये प्रबन्ध काव्य के अंश नहीं ऐसे संग्रह मुक्तक काव्य की श्रेणी में आते हैं।

मुक्तक काव्य

इसमें प्रत्येक छन्द अपने आप में पूर्ण एवं स्वतंत्र रहता है। एक छंद का संबंध दूसरे से नहीं रहता है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने मुक्तक काव्य के विषय में कहा है-मुक्तक काव्य एक चुना हुआ गुलदस्ता है।

कबीर की साखी, बिहारी के दोहे, रहीम के दोहे, वृन्द के दोहे आदि मुक्तक काव्य हैं।

9. आपकी पाठ्यपुस्तक के पद्य भाग में कौन-कौन से पाठ, मुक्तक काव्य की श्रेणी में आते है?

10. निम्नलिखित काव्य पंक्तियों में गुण पहचानिए-

क. जो वे होता मलिन लखती गोप के बालकों को।

ख. आटा चींटी विहग गण थे वारि औ अन्न पाते।

11. निम्नलिखित काव्यांश में निहित काव्य सौन्दर्य को लिखिए-

अ. तो धीरे मधुर-स्वर से हो विनीता बतातीं
हाँ आवेंगे, व्यथित-ब्रज को श्याम कैसे तजेंगे।

आ. गा के लीला स्व प्रियतम की वेणु,वीणा बजा के ।
प्यारी बातें कथन करके वे उन्हें बोध देतीं।

योग्यता विस्तार

1. सूरदास ने सूरसागर में राधा का चित्रण किया है और हरिऔध ने भी अपने काव्य में राधा का चित्रण किया। अपने शिक्षक की सहायता से दोनों के अन्तर को समझिए और एक-एक अनुच्छेद लिखिए।

2. राधा की समाज सेवा और वर्तमान में संचालित नारी सेवा केन्द्रों के क्रियाकलापों का तुलनात्मक अध्ययन करने हेतु किसी समाज सेवी संस्था में कार्यों का अवलोकन कीजिए और उसमें आपने क्या सहयोग दिया? उसे लिखिए।

3. समाज के उत्थान व विकास हेतु आप स्वयं जिन कार्यों को कर सकते हैं उसे सूचीबद्ध कीजिए और एन.एस.एस. के माध्यम से उन कार्यों को करने का प्रयास कीजिऐ।

4. कबीर, तुलसी, वृंद, रहीम, बिहारी आदि के दोहों का संकलन कीजिए। उन्हें कंठस्थ कीजिए तथा अंत्याक्षरी प्रतियोगिता का आयोजन कीजिए।

शब्दार्थ

1. कबीर की वाणी-

फकीरी= वैराग्य। **अमीरी**= वैभव। **गुजरान** = गुजर करना। **सबूरी**=संतोष। **कूँड़ी**= पत्थर का बना हुआ प्याला। **सोंटा**= छड़ी, डंडा, **मगरूरी**= अभिमान, **साहिब**= स्वामी। **हौ**=हूँ, मैं। **मनवा**=मन। **लेखी**=लिखा हुआ। **सुरझावत हारी**= सुलझाने वाली। **उरझाई** =उलझाकर। **जुगन-जुगन** = युगों-युगों से। **बिहंगी**=पक्षी की तरह इधर-उधर ताकने वाला। **रंगी**- संसार के राग रंग में डूबा रहने वाला । **बाहे**- बहती है। **वामे**- उसमें। **काया** =शरीर। **बौराया**= पागल हो गया है। **धावै**= दौड़ता है। **पतियाना**=विश्वास करता है। **नेमी**= नियमों का पालन करने वाले। **आतम**= आत्मा,**पसाने**= पत्थर। **तिनका** = उनका। **थोथा** = खोखला। **मेहर**=कृपा, **जिबह** =पशु को धीरे-धीरे काटना। **झटका** = खड्ग के एक झटके में पशु को मारना। **स्याना** = चतुर, होशियार ।

2. राधा की लोकसेवा-

नन्दांगना=नन्द की पत्नी,यशोदा। **नाना**=तरह -तरह की। **बोध**=ज्ञान, समझाइश। **विपन्ना**=दुखी। **जतन** = यत्न, उपाय। **चारू**=सुन्दर, पवित्र। **क्लान्तियाँ**= दु:ख। **तद्गता**= तन्मय। **वेणु**=बंसी। **अधि**=मानसिक दु:खचिन्ता। **विजित गृह**= चिन्ता मुक्त घर। **भूत सम्बर्धना**=प्राणियों के उत्थान में । **मोहावरित**=मोह में जकड़ी। **भरत-भुव**=भारत देश।

***